RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper

सम्पूर्ण क्रान्ति की अवधारणाः– जय प्रकाश नारायण के विशेष संदर्भ में

Dr. Pankaj Bhardwaj

Research Scholar &
Asst. Professor (Political Science),
Shaheed Bhagat Singh, P.G. College,
Hingoniya, Jaipur

शोध सारांश–

सम्पूर्ण क्रान्ति के लिए जयप्रकाश के अनुसार ''विभिन्न प्रकार के संघर्ष और रचनात्मक कार्य करने पड़ेगें। उनके अनुसार ''हमारे आंदोलन ने जनता को बुरी तरह झंकृत कर दिया है। अब केवल उन्हें यह विश्वास दिलाना शेष रह गया है कि छात्रों और अन्य वर्गों की भांति यह आंदोलन उनका अपना है। इस दृष्टि से निर्धन और सामान्य जनता के हितार्थ कुछ कार्यक्रम लाना चाहिए। उदाहरणार्थ भूमिहीनों में भूमि वितरण, कृषि मजदूरों को उचित मजदूरी देना, सिंचाई कर, भू–राजस्व, सड़क टैक्स, स्वास्थ्य टैक्स जैसे करों का उन्मूलन करना, आदिवासियों की समस्याओं का निवारण, दहेज प्रथा का उन्मूलन, हरिजन, आदिवासियों और स्त्रियों को समानता का स्तर प्रदान करना और जनता की तात्कालिक समस्याओं का निवारण करना जैसे कि अन्न, तेल आदि की उपलब्धि, बाढ़ सहायता कार्य आदि। इस प्रकार सम्पूर्ण क्रांति के लिए चर्तुविधि कार्यक्रम शिक्षणात्मक, संगठनात्मक, रचनात्मक और संधात्मक हाथ में लेना होगा।

Keyword: सम्पूर्ण क्रांति, शोषण, विषमता, सामाजिक न्याय, असमानता।

शोध विस्तार–

जयप्रकाश नारायण ने इस बात पर जोर दिया कि जनता को अपनी लड़ाई स्वयं लड़नी चाहिए। उसे किसी दूसरे पर निर्भर नहीं होना चाहिए। लड़ाई का मार्ग शांतिमय और शुद्ध होना चाहिए। सबसे पहले हमें जनता को जागरूक करने के साथ–साथ संगठित भी करना चाहिए। जनता के सेवक के रूप में और उसके प्रहरी के रूप में अपनी भूमिका निभानी चाहिए।

जयप्रकाश नारायण सम्पूर्ण क्रांति का नेतृत्व नवयुवकों को सौंपना चाहते थे क्योंकि नवयुवकों में अन्याय के प्रतिविरोध करने की क्षमता होती है यदि वे अन्याय का विरोध नहीं करेंगे तो उनका भविष्य अंधकार में होगा। नवयुवकों में दूसरे लोगों की उपेक्षाकृत चारित्रिक गुण अधिक होते है। वे शारीरिक व मानसिक रूप से अधिक शक्तिशाली व उत्साहवर्धक होते है। नवयुवक अपने बड़ों से सलाह–मशविरा तो ले सकते है लेकिन नेतृत्व नवयुवकों को ही करना चाहिए।[1]

जयप्रकाश नारायण सम्पूर्ण क्रांति को एक शांतिमय आंदोलन बताते थे। सिद्धराज ढ़ड्ढ़ा ने इस संदर्भ में कहा है कि क्रांति एक शांतिमय साधन है। यह सच्चाई के रास्ते पर चलती है। उन्होंने अहिंसा और सच्चाई जनता की लड़ाई के यंत्र बताये है। निडरता उसके प्राण है। इस आंदोलन के अन्तर्गत किसी दल से कोई संबंध नहीं होना चाहिए। जनता का हित सर्वोपरि होना चाहिए। यह संपूर्ण जनता की मुक्ति का आंदोलन है। सम्पूर्ण क्रांति के कार्यकर्ताओं को सफलता के अतिरिक्त और कोई कामना नहीं करनी चाहिए, उन्हें तो केवल सफलता का लक्ष्य ही सामने रखना चाहिए। कार्यकर्ताओं को सता के लालच में कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए। इस आंदोलन की रणनीति के दो पहलू है– संघर्ष और सहयोग। आंदोलन का सहयोग स्वधर्म है। यदि संघर्ष में सहयोग नहीं होगा तो उद्देश्य की प्राप्ति ठीक प्रकार से नहीं हो सकती है क्योंकि सम्पूर्ण क्रांति में तो समाज के प्रत्येक वर्ग से सहयोग की अपेक्षा की जाती है।[2]

सम्पूर्ण क्रांति के उद्देश्य–

शोषण और विषमता को जन्म देने वाली वर्तमान व्यवस्था को नष्ट कर, एक नवीन समाज की रचना ही सम्पूर्ण क्रांति का लक्ष्य है। सम्पूर्ण व्यवस्था को बनाए रखने वाले स्वार्थी एवं लक्ष्यों, मूल्यों के विरूद्ध यह संघर्ष है। गांधी जी के पूर्ण स्वराज्य के अधूरे स्वप्न को साकार करने का आंदोलन है। सिद्धराज ढड्ढ़ा के अनुसार जनता के द्वारा जनता की मुक्ति का सारे समाज के निर्माण का आंदोलन है।

सम्पूर्ण क्रांति का उद्देश्य महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और आर्थिक राजनैतिक केन्द्रीयकरण से उत्पन्न गुलामी को रोकना है। सम्पूर्ण समाज की इन समस्याओं ने झकझोर दिया है। ये इस प्रकार की समस्यायें है जिनका नियन्त्रण ठीक प्रकार से नहीं हुआ तो निश्चित खूनी क्रांति होगा। इसके उपरान्त इसका बहाना बनाकर लोग तानाशाही की स्थापना करेंगे। उसका रूप कुछ भी हो।

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved *ISSN:* 2349-7637 (Online)

महंगाई, भ्रष्टाचार, राजनीतिक व्यवस्था आदि ऐसे कारण है जो कि ब्रह्य दिखावटी नहीं है बल्कि आन्तरिक है। उसकी जड़े आज की सामाजिक, आर्थिक अधिक और राजनैतिक व्यवस्था हमारी गलत धारणाओं में गहरी पैठ बनी हुई है। यह कोई सामान्य क्रांति नहीं है। शोषण और विषमता को जन्म देने वाली वर्तमान व्यवस्था को तोड़कर एक नवीन समाज की रचना करना ही सम्पूर्ण क्रांति का उद्देश्य है। छोटी–छोटी मांगों की पूर्ति के लिए लड़ा जाने वाला आंदोलन नहीं है। सम्पूर्ण व्यवस्था को स्थाई रूप देना व निहित स्वार्थों एवं मूल्यों ने खिलाफ यह संघर्ष है जब एक समाज से इस प्रकार की विसंगतियां दूर नहीं होगी तब तक यह व्यवस्था ठीक नहीं होगी।[3]

क्रांति के उद्देश्य–

सम्पूर्ण क्रांति का उद्देश्य वैचारिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक आदि जीवन के सभी क्षेत्रों में आमूल परिवर्तन से है। ये सभी इस प्रकार के तत्व है जिनके अभाव में कोई भी व्यवस्था सुचारू रूप से संचालित नहीं हो सकती है।

सम्पूर्ण क्रांति का आंदोलन अध्यात्मिक है, केवल भौतिक नहीं। आध्यात्म से अभिप्राय पंथ सम्प्रदाय या ब्रह्मज्ञान से नहीं है। आध्यात्म का अर्थ है समूची सृष्टि की एकता में विश्वास। एकता की अनुभूति ही आध्यात्म हे। इस एकता की अनुभूति के निम्नलिखित परिणाम है–

1. प्रत्येक मनुष्य को अपना निजी स्वार्थ छोड़कर दूसरों के साथ सहानुभूति व भलाई का रास्ता अपनाना चाहिए। सब के हित में ही व्यक्ति का हित निहित होता है। इसका आशय यह है कि किसी भी व्यक्ति में इस प्रकार की अनुभूति का जन्म स्वेच्छा से ही होता है बाह्य दबाव से नहीं।

2. समूह जीवन और परावलम्बन में आस्था तथा एक दूसरे के सुख–दुःख में हिस्सेदारी की भावना भी सहज ही जाएगी।

3. इसके फलस्वरूप अयोग्य का विचार प्रस्तुत होगा। कमजोर की चिन्ता करना उसको वरीयता देना प्रथम कर्तव्य होगा।[4]

सम्पूर्ण क्रांति के रूप–[5]

जयप्रकाश नारायण ने अपनी जेल डायरी में सम्पूर्ण क्रांति की नैतिक व आध्यात्मिक, वैचारिक व बौद्धिक, सांस्कृतिक सामाजिक, शैक्षणिक, राजनीतिक और आर्थिक क्रांति के सात रूप बताए और इन सभी क्षेत्रों में केवल सुधार और कुछ छोटे–मोटे सुधारों की ही आवश्यकता नहीं है बल्कि निराशाजनक परिस्थितियों को बदलने के लिए जीवन मूल्यों को बदलने की आवश्यकता है। ये सात क्रांतियां इस प्रकार है–

- **नैतिक व आध्यात्मिक क्रांति :** जयप्रकाश नारायण के अनुसार व्यक्ति आत्मा और पदार्थ दोनों ही है और जीवन में उसकी भौतिक और आध्यात्मिक दोनों आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए। व्यक्ति को भोजन, वस्त्र, आवास इत्यादि प्रदान करवाई जानी चाहिए। भोजन पर्याप्त साधारण और पोषक हो परन्तु प्रचुरता में नहीं। कपड़े न केवल उपयोगी हो परन्तु आंखों को भाने वाले व साधारण हो परन्तु अत्यधिक न हो, फैशन की सनक न हो और बर्बादी न हो। आवास साधारण और मनुष्य के रहने योग्य हो। उन्होंने उपभोग पर ऐच्छिक सीमाओं का संकेत दिया ताकि साधारण और आडम्बर विहिन जीवन के माध्यम से व्यक्ति स्पष्ट और उच्च चिन्तन के स्तर तक पहुंच सके। द्वन्द्वों को टालने हेतु लोगों की मानसिक अवस्था को बदलना होगा। भौतिक सन्तुष्टि को उनके द्वारा अपने आप में एक आध्यात्मिक जीवन के रूप में माना गया है।[6]

- **वैचारिक व बौद्धिक क्रांति–** जयप्रकाश नारायण लोगों को अपने विचारों से सहमत करवाना चाहते थे। उनकी क्रांति का केन्द्र बिन्दु था मूल्यों में क्रांतिकारी परिवर्तन लाना और व्यक्ति में परिवर्तन लाकर समाज में परिवर्तन लाना। इसलिए उनकी अपील इस तरह की होती थी कि वह आम आदमी के हृदय को आसानी से छू लेती थी। इसलिए उनका परिवर्तन का कार्यक्रम यद्यपि व्यक्ति की ओर इंगित करता था। किन्तु था जनमानस के लिए इससे वे न केवल प्रभावित हुए इस कार्यक्रम को उन्होंने क्रियात्मक रूप भी दिया। इस कार्यक्रम को धीमी गति से चलाना था क्योंकि दुलर्भ से दिखने वाले उद्देश्य को पाने के लिए इस कार्यक्रम को विभिन्न चरणों में चलाना था। ये बातें जयप्रकाश नारायण की वैचारिक क्रांति में निहित थी।

- **सांस्कृतिक क्रांति–** मनुष्य को अपने साथियों के साथ सामान्य व्यवहार और मानवीय जीवन के मूल्यों में बिना आधारभूत परिवर्तन जयप्रकाश नारायण की सांस्कृतिक क्रांति की धारणा सम्भव नहीं है। मनुष्य समाज में रहता है जिसका वह स्वयं सदस्य है और साथ–साथ वह बाहरी दुनिया से भी जुड़ा हुआ है। एक आदर्श समाज की स्थापना के लिए मनुष्य के मन

और वृत्ति को बदलने के साथ समाज का बाहरी ढ़ांचा भी बदलना अनिवार्य है। व्यक्ति की गुणवता और सामाजिक जीवन के लिए यह आवश्यक था कि लोगों को सच्चाई, प्रेम और करूणा से उनकी ''नैतिकता के सिद्धान्तों के रूप में बंधे रहना चाहिए। सच्ची और स्थाई नैतिकता स्वयं थोपी हुई होती है। स्वयं के बिना इसे बाहर से बाधित नहीं किया जा सकता। अतः इस प्रकार खुशहाल और संतुलित जीवन को समाप्त न करने के लिए जयप्रकाश नारायण ने सांस्कृतिक क्रांति की वकालत की।[7]

- **सामाजिक क्रांति–** जयप्रकाश नारायण सर्वोदय नीतियों पर आधारित समाज की पुनर्रचना करना चाहते थे। यह क्रांति तभी पूर्ण होगी जब सामाजिक तंत्र में पूर्ण क्रांति को प्राप्त कर लिया जाएगा। सामाजिक क्रांति में दहेज प्रथा, जाति प्रथा, अछूतता, लिंग–भेद इत्यादि को जड़ से खत्म करना सम्मिलित है। उनके अनुसार सामाजिक तंत्र को पूर्ण रूप से बदल देना जरूरी था यहां तक कि उसकी आत्मा और आन्तरिक सार को भी। उनका उद्देश्य सामाजिक ढ़ांचे और लोगों को साथ–साथ बदलने का था। उनको इसका अहसास था कि यह एक लम्बा रास्ता था जिसको एक दिन में तय नहीं किया जा सकता था। सामाजिक असमानताओं को खत्म करना था और लोगों को प्रभावशाली सामाजिक न्याय प्रदान करना आवश्यक था।

- **शैक्षणिक क्रांति–** यद्यपि भारत में शैक्षिणिक योजना को पचास के दशक में अपना दिया गया था परन्तु ये शैक्षिणिक विकास की दिशा और पैटर्न को नियमित करने निश्चित करने में असफल रहीं। सर्वस्व शैक्षणिक वातावरण पूर्ण रूप से अव्यवस्थित था। जयप्रकाश नारायण चाहते थे कि शिक्षा का उद्देश्य पूर्ण क्रांति हो। अतः इसे स्कूल की चार दिवारी तक ही सीमित नहीं हो ना चाहिए। इस नियमित शिक्षा के साथ वयस्क और सामाजिक शिक्षा को अपनाना चाहिए। नई शिक्षा के दो आधारभूत सिद्धान्त सह–संबंध और आत्म सहायता होने चाहिए। अध्यापन को जीवन से जुड़ा होना चाहिए और इसे विद्यार्थियों को जीवन में प्रवेश करने का जीविका उपार्जन योग्य बनाने वाला होना चाहिए। विद्यार्थी अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण करना सीखे। शिक्षा को विद्यार्थियों में अहिंसा और सच्चाई की उत्पत्ति को संचालन करने में सहायक होना चाहिए। नई शिक्षा सामान्यतः स्वयं भरोसे, स्वयं नियमित और राज्य मुक्त समाज की प्राप्ति के लिए रास्ता सुलभ कराने वाली हो।[8]

- **राजनीतिक क्रांति–** जयप्रकाश ने पाया कि भारत में जिस प्रकार का प्रजातन्त्र था और जैसे ये कार्य कर रहा था वो वास्तविक चीज का ढ़ांचा मात्र था। इसके अन्दर कोई जीवन नहीं था, कोई खून और मांस नहीं केवल सूखी हड्डियां थी। उनके मतानुसार ये प्रजातन्त्र की असफलता थीं क्योंकि ये स्वस्थ तरीके से काम नहीं कर रहा था और लोगों की वास्तविक इच्छाओं को नहीं दर्शाता था। ये बनावटी प्रजातन्त्र था। चुनावों के माध्यम से एक दल दूसरे दल का स्थान ले लेता और लोगों को अगले चुनावों के आने तक कठिनाइयों और दुःखों को झेलना पड़ता। लोगों को जिसे वे चाहे अपना मत दे सकते है या वे अपने मत का प्रयोग न करने के लिए भी स्वतंत्र है यदि वे ऐसा चाहे तो। केवल ढ़ांचा या तंत्र परिवर्तित होता दिखाई देता है जनता या लोग दिखाई नहीं देते।

- इसलिए जयप्रकाश नारायण ने वर्तमान दोष–युक्त प्रजातन्त्र को वास्तविक प्रजातन्त्र में बदलने की योजना की रूपरेखा प्रस्तुत की। वे भारत में पश्चिमी शैली पर आधारित वर्तमान प्रजातान्त्रिक प्रणाली से खुश नहीं थे। इनकी प्रजातांत्रिक क्रांति, इसके पुनर्निर्माण का और इसके स्थान पर एक नई राज्य पद्धति बनाने का प्रयास थी। उन्होंने इसे पंचायती राज शैली पर आधारित सहभागी प्रजातंत्र बताया। जयप्रकाश नारायण की राजनीतिक क्रांति का उद्देश्य नीचे के लोगों की सरकार या ग्राम–स्वराज्य बनाना था। उनका तत्कालीन प्रोग्राम वर्तमान प्रणाली की कमियों को जड़ से उखाड़ देने का विचार था लेकिन उनका दीर्घकालीन उद्देश्य लोकशक्ति के माध्यम से राजनीति को लोकनीति के द्वारा बदलना था। उन्होंने ग्राम स्वराज्य को ग्राम संगठन के समकालीन प्रजातांत्रिक तरीकों का उपयुक्त विकल्प पाया।[9]

इसे बिना हिसाब के विभिन्न अवस्थाओं से होते हुए धीरे–धीरे प्राप्त किया जाना था। ''ग्राम स्वराज्य'' की तरफ पहला कदम राज्य के क्रियाकलापों और उसके आकार व अधिकारों को घटाना था। जब लोग सरकार पर कम से कम भरोसा करेंगे तब एक विकेन्द्रित स्वयंशासित राज्य उभरेगा और आर्थिक विकेन्द्रीयकरण व लोकशक्ति की उन्नति ग्राम स्वराज्य को अन्जाम देगी।

दलविहिन प्रजातंत्र जयप्रकाश नारायण का तत्कालीक उद्देश्य नहीं था। परन्तु वे आदर्श ग्रामस्वराज्य की स्थापना करना चाहते थे। कल्याणी समाज के लिए कल्याणकारी राज्य को त्याग कर जयप्रकाश नारायण ने एक नई शुरूआत की। उन्होंने गांधी के ''सामुदायिक–समाज'' के मार्ग का समर्थन किया। कुछ लोगों की आकांक्षा थी कि उनकी राज्य पद्धति की ओर अधिक विस्तृत व्याख्या होती परन्तु जयप्रकाश नारायण ये नहीं करना चाहते थे क्योंकि ये केवल अनावश्यक विवादों को उठाने वाला, राज्य

पद्धति के मुख्य विषयों से ध्यान को हटाकर और कहीं ले जाने वाला होता। परन्तु ग्राम–स्वराज्य सर्वोदय आंदोलन में ही नीहित था। क्योंकि भूदान ग्रामदान आंदोलन, जमीदारी प्रथा को समाप्त करना और सामाजिक रूप से सजातीय स्वयं भूमि जोतने वालों के समुदाय को स्थापित करना था। इसलिए विनोबा के लिए जरूरी था कि वे एक ऐसी उपर्युक्त राज पद्धति को उन्नत करना चाहते थे जो इस उद्देश्य के साथ चलती। इसलिए विनोबा जी ने ग्राम स्वराज्य के विचार को उन्नत किया। जयप्रकाश नारायण ने पंचायती राज प्रणाली पर आधारित इसके क्रियान्वयन की वकालत की।

आर्थिक क्रांति–[10] आर्थिक क्रांति का अर्थ था समाज के आर्थिक ढ़ांचे और संस्थाओं में पूर्ण परिवर्तन। जयप्रकाश नारायण की आर्थिक क्रांति में परिवर्तन और नई संरचना दोनों नीहित थे। क्रांतिकारी परिवर्तन का परिणाम न केवल एक परिवर्तन था परन्तु एक बहुत तेज, दूरगामी और आधारभूत परिवर्तन, कई बार तो परिवर्तित वस्तु में गुणात्मक परिवर्तन लाने वाला।

जयप्रकाश नारायण चाहते थे कि आर्थिक उन्नति का उद्देश्य मनुष्य होना चाहिए। इसे प्रत्येक व्यस्क या परिवार के मुखिया या परिवार की रोजी रोटी कमाने वाले को काम प्रदान करवाना होना चाहिए। इसे प्रत्येक को निम्नतम जीवनमान उपलब्ध करवाने वाला होना चाहिए। भारत में बड़े स्तर पर आधुनिक तकनीकी व आर्थिक पूंजी पर आधारित उद्योग शायद काफी हो चुके थे। इसलिए जयप्रकाश नारायण ने इनके विकास पर रोक लगाने का सुझाव दिया केवल रक्षा की जरूरतों के उत्पादों को छोड़कर। क्योंकि जयप्रकाश नारायण के लिए भारत की जनता का कल्याण ज्यादा महत्वपूर्ण था। उन्होंने अधिक कीमती, दिखावटी व अनुपयोगी उपग्रह विकास जैसे की चांद पर उतरना इत्यादि को त्यागने की वकालत की। अतः उद्योग विकास को मध्यम उद्योग लघु उद्योग और ग्रामीण उद्योगों को उन्नति का शासन अपनाना चाहिए। उपर्युक्त तकनीकी के विकास में समस्या पर आधारित शोध को अपनाना चाहिए और इसे आगे बढ़ाना चाहिए।

स्वामित्व व्यवस्था जो अपनाई गई है व्यक्तिगत स्वयं रोजगार प्रदान करने वाली, सामुदायिक स्वामित्व, सहभागी स्वामित्व, प्राइवेट मुनाफे पर आधारित स्वामित्व जो काफी संख्या में मजदूरों को रोजगार देता है और उपयुक्त रूप से न्यूनतम वेतन प्रदान करवाने वाला होना चाहिए। पूंजीवादी व्यवस्था पर आधारित उद्योग सीमित होने चाहिए। सार्वजनिक निगमों के मामले में प्रोत्साहन के विषय का गहराई से अध्ययन होना चाहिए। इस बारे में दिशा निर्देश दिये जाने चाहिए। बड़े संस्थानों में मजदूरों का स्वामित्व लागू नहीं किया जा सकता अपितु सामाजिक स्वामित्व लागू करना होगा।[11]

श्रमिकों के स्वामित्व और प्रबन्ध के संबंध में जयप्रकाश का मत है कि श्रमिक ट्रस्टी के रूप में यदि उद्योग का प्रबंध कर सकते है तो वह सर्वोतम है। वृहद क्षेत्र में सार्वजनिक और निजी स्वामित्व या कम्पनी के स्वामित्व की व्यवस्था को चलने दिया जाना चाहिए। यदि कानून द्वारा निर्धारित आचरण का पालन किया जाना है तो आवश्यक प्रतिबंध अर्थात कन्ट्रोल एवं लाइसेंस समाप्त किये जा सकते है। श्रमिकों को प्रबंध कार्य में सम्मिलित किया जाना चाहिए लेकिन एक शर्त पर कि श्रमिक संगठन अपने प्रतिनिधियों को इस दृष्टि से उचित रूप से प्रकाशित करें।[12]

सम्पूर्ण क्रांति के साधन– साधन संबंधित दो प्रश्न है सम्पूर्ण क्रांति की शक्ति और उसकी प्रक्रिया क्या होनी चाहिए। जयप्रकाश के अनुसार ''ऐसी क्रांति के लिए लोकशक्ति का जागरण गांधी का सपना था और यही उनकी साधना थी। बापू के स्वतंत्रता संग्राम का मैं एक सिपाही रहा हूँ। क्रांति सरकारी शक्ति से नहीं, जनशक्ति से होगी। शासन के द्वारा समाज में क्रांति और वह भी सम्पूर्ण क्रांति, दुनिया में आज तक नहीं हुई है क्रांति तो जनता के द्वारा ही होती है गांधी जी समाज परिवर्तन का मुख्य साधन राज सता को नहीं मानते थे। जनशक्ति ही क्रांति का उनके अनुसार प्रमुख साधन है। उनकी मान्यता थी कि जिस समाज के चरित्र को यदि मानवीय रखना है तो उस समाज को समानता और बन्धुत्व के मौलिक सिद्धान्तों में विश्वास करना होगा। समाज में इसकी स्वीकृति लोक–शिक्षण और जब जरूरी हो सत्याग्रह से प्राप्त करनी होगी।[13]

निष्कर्ष–

सम्पूर्ण क्रांति की धारणा निसन्देह प्रशसनीय है। यह जनता की मुक्ति का आंदोलन है। लेकिन जनता की मुक्ति के लिए वस्तुगत कसौटियों का निर्माण आपेक्षित है। सम्पूर्ण क्रांति अहिंसात्मक होगी लेकिन क्या अहिंसात्मक क्रांति के लिए लम्बे प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं है ? सम्पूर्ण क्रांति के लिए सबसे पहली आवश्यकता सिद्धराज जी के अनुसार इस क्रांति में विश्वास करने वाली निष्काम और समर्पित कार्यकर्ताओं की है। अतः समर्पित कार्यकर्ताओं की ईकाई खड़ी की जानी चाहिए। अहिंसात्मक क्रांति हिंसात्मक न हो जाये उसकी क्या प्रतिभूति है ? मनुष्य स्वभाव से न तो एम.एस.एन.राय के अनुसार विवेकी है न गांधी के अनुसार नैतिक और न विनोबा के अनुसार सदाचारी है। जयप्रकाश ने कहा है कि ''यदि कोई ऐसा हिंसात्मक आंदोलन होगा जिसमें परिवर्तन की संभावना छिपी होगी तो मैं उसका विरोध नहीं करूगां। यह बात मैंने कई बार कही है लेकिन इस परिस्थिति में क्या होगा कुछ कहा नहीं जा सकता। मैं अभी निराश नहीं हूँ।'' सच्चिदानन्द जी ने इसके विपरीत मत व्यक्त किया है कि सम्पूर्ण क्रांति से जयप्रकाश का यह भी मतलब है कि क्रांति करते समय साधन का ध्यान रखा जाए। अतः क्रांति शान्तिमय अहिंसात्मक

साधनों से ही होगी। स्मरणीय है कि जयप्रकाश ने सम्पूर्ण क्रांति को पर्वतारोहण की संज्ञा दी है। ''मेरे विचार इस दशा में आगे मनन के लिए सामग्री प्रदान करते है। सम्पूर्ण क्रांति की पूरी–पूरी रूपरेखा आज नहीं दी जा सकती वह तो आगे बढ़ते हुए धीरे–धीरे प्रकट होती जाएगी। इतना काफी है कि हम पहला कदम रखे। परिस्थितियां अगला कदम सुझाती जाएगी।''

संदर्भ सूची–

1. जयप्रकाश नारायण : मेरी जेल डायरी, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 1977, पृ.15
2. जयप्रकाश नारायण : (संपादक) नारायण देसाई, कान्तिशाह, जयप्रकाश अमृतकोष, नई दिल्ली, 1982, पृ.103
3. जयप्रकाश नारायण : व्यक्तित्व और विचार, (अभिनन्दन ग्रन्थ) सर्वसेवा संघ के तत्वाधान में प्रकाशित, ताराचन्द वर्मा, चिन्तमय प्रकाशन, जयपुर 1978
4. सिद्धराज ढ़ड्ढा : सम्पूर्ण क्रांति क्या ? क्यों और कैसे ? सर्वसेवा संघ वाराणसी, 1978, पृ. 7
5. जयप्रकाश नारायण : मेरी विचार यात्रा भाग–2, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 1974, पृ. 92–93
6. जयप्रकाश नारायण : टूवार्डस टोटल रिवोल्यूशन, वोल्यूम–1, सर्वसेवा संध वाराणसी, 1968, पृ. 16–17
7. सिद्धराज ढ़ड्ढा : पूर्वोक्त, पृ. 1–2
8. जयप्रकाश नारायण : मेरी विचार यात्रा भाग–2, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 1974, पृ. 93
9. सच्चिदानन्द : टोटल रिवोल्यूशन : कनशप्ट एण्ड स्ट्रटजी : एस.दास गुप्ता, (आडिटर), टोटल रिवोल्यूशन, ए सिम्पोजियम जयप्रकाश नारायण, कलकत्ता, 1978, पृ. 1
10. वहीं, पृ. 2
11. जयप्रकाश नारायण : टूवार्डस टोटल रिवोल्यूशन, सम्पादक (बह्मानन्द), पूवोक्स, 1975, पृ. 1
12. वहीं, पृ. 9–10
13. जयप्रकाश नारायण : टूवार्डस टोटल रिवोल्यूशन इज नैशसरी, सिटिड बॉय एस.एल.एम. प्राचन्द, दि ग्रेट अपहेवल : एम आस्पेक्टस, अभिषेक पब्लिकेशन्स, चण्डीगढ़, 1977, पृ. 98

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)